

॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ त्वाहत्वामाह ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ संकल्पं कामं गतासि गमिष्यसि ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ इति० सभा०  
 एतस्मात्कारणाद्राजन् हरिश्चंद्रो विराजते ॥ तेभ्यो राजसहस्रेभ्यस्तद्विद्विभरतर्षभ ॥ १८ ॥ समाप्य च हरिश्चंद्रो महायज्ञं प्रतापवान् ॥ अभिषिक्तश्च शुश्रुभे साध्याज्ये  
 ननराधिप ॥ १९ ॥ ये चान्ये च महीपाला राजसूयं महाक्रतुं ॥ यजंते ते सहेद्रेण मोदंते भरतर्षभ ॥ २० ॥ ये चापि निधनं प्राप्ताः संग्रामेष्वपलायिनः ॥ ते तत्सदनमा  
 साद्य मोदंते भरतर्षभ ॥ २१ ॥ तपसा ये च तीव्रेण त्यजंतीह कलेवरं ॥ ते तत्स्थानं समासाद्य श्रीमंतो भांति नित्यशः ॥ २२ ॥ पिता च त्वाहकोऽतिपांडुः कौरवनंदन ॥  
 हरिश्चंद्रेऽश्रियं दृष्ट्वा नृपतौ जातविस्मयः ॥ २३ ॥ विज्ञायमानुषं लोकमायांतं मानराधिप ॥ प्रोवाच प्रणतो भूत्वा वदेथास्त्वं युधिष्ठिरं ॥ २४ ॥ समर्थोऽसि महीं  
 जेतुं भ्रातरस्ते स्थितावशे ॥ राजसूयं क्रतुश्रेष्ठमाहरस्वेति भारत ॥ २५ ॥ त्वयीष्टवति पुत्रे हं हरिश्चंद्रवदाश्रुवै ॥ मोदिष्ये बहुलाः शश्वत्समाः शक्रस्य संसदि ॥ २६ ॥  
 एवं भवतु वक्ष्ये हंतव पुत्रं नराधिपं ॥ भूलोकं यदि गच्छेयमिति पांडुमथाब्रुवं ॥ २७ ॥ तस्य त्वं पुरुषव्याघ्र संकल्पं कुरु पांडव ॥ गतासित्वं महेंद्रस्य पूर्वं सहसलोकतां  
 ॥ २८ ॥ बहुविघ्नश्च नृपते क्रतुरेष स्मृतो महान् ॥ छिद्राण्यस्य तु वाञ्छंति यज्ञघ्ना ब्रह्मराक्षसाः ॥ २९ ॥ युद्धं च क्षत्रशमनं पृथिवीक्षयकारणं ॥ किंचिदेव निमित्तं च  
 भवत्यत्र क्षयावहं ॥ ३० ॥ एतत्संचित्य राजेंद्र यत्क्षेमं तत्समाचर ॥ अप्रमत्तोऽत्थितो नित्यं चातुर्वर्ण्यस्य रक्षणे ॥ ३१ ॥ भव एध स्वमोद स्वधनैस्तर्पय च द्विजान् ॥  
 एतत्ते विस्तरेणोक्तं यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ आपृच्छेत्वांगमिष्यामि दाशार्हं नगरीं प्रति ॥ ३२ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवमाख्याय पार्थेभ्यो नारदो जनमेजय  
 जगाम तैर्दत्तो राजन् नृपिभिर्यैः समागतः ॥ ३३ ॥ गते तु नारदे पार्थो भ्रातृभिः सह कौरवः ॥ राजसूयं क्रतुश्रेष्ठं चिंतयामास पार्थिवः ॥ ३४ ॥ इ० म० भा० स  
 भाप० लोकपालस० पांडुसंदेशकथने द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ समाप्तं च लोकपालसभाख्यानपर्व ॥ १३ ॥ अथ राजसूयारंभपर्व ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ऋषे  
 स्तद्वचनं श्रुत्वा निशश्वासयुधिष्ठिरः ॥ चिंतयन् राजसूयेष्टिनले भेशर्मभारत ॥ १ ॥ राजर्षीणां च तं श्रुत्वा महिमानं महात्मनाम् ॥ यज्वनां कर्मभिः पुण्यैर्लोकप्रा  
 प्तिं समीक्ष्य च ॥ २ ॥ हरिश्चंद्रं च राजर्षिरोचमानं विशेषतः ॥ यज्वानं यज्ञमाहर्तुं राजसूयमियेष सः ॥ ३ ॥ युधिष्ठिरस्ततः सर्वानर्चयित्वा सभासदः ॥ प्रत्यर्चितश्च  
 तैः सर्वैर्यज्ञायैव मनोदधे ॥ ४ ॥ सराजसूयं राजेंद्र कुरूणामृषभस्तदा ॥ आहर्तुं प्रवणं चक्रमनः संचित्य चासकृत् ॥ ५ ॥ भूयश्चाद्भुतवीर्यो जाधर्ममेवानुचितय  
 न् ॥ किंहितं सर्वलोकानां भवेदिति मनोदधे ॥ ६ ॥ नैलकंठीये भारतभावदीपे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥